आज के युग में कौटिल्य अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता

जन्मजेय खुंटीआ [1] *एवं रीना बजाज* [2]
[1]Department of Economics, School of Open learning, University of Delhi, Delhi
[2]School of Open learning, University of Delhi, Delhi
Email Id: janmejoykhuntia@gmail.com

सार (Abstract)

कौटिल्य का अर्थशास्त्र जिसके जनक स्वयं चाणक्य या विष्णुगुप्त या कौटिल्य है जोकि मौर्य वंश का शासक नियुक्त करने में भी अहम् भूमिका निभाते हैं। चाणक्य भारत के प्रथम महान राजनीतिज्ञ व कुशल आर्थिक नीतियों के जनक के रूप में जाने जाते हैं चाणक्य की नीतियाँ वर्तमान युग में भी अति प्रासंगिक है इस लेख में चाणक्य के राजनीतिक तथा आर्थिक सिद्धांतों का उल्लेख किया गया है जिससे देश की कुशल व्यवस्था संचालन प्रक्रिया संभव हो पाती है कौटिल्य के अर्थशास्त्र के माध्यम से हमें इस बात का बोध होता है कि देश के राजा के क्या कर्त्तव्य है तथा प्रजातंत्र को कैसे सुदृढ़ बनाकर देश की जनता का कल्याण किया जा सकता है।

मुख्य शब्दावली: साम्राज्य, उदीयमान, निरकुंश, प्रजातंत्र, सशक्त, राजकोष, हस्तशिल्प, प्रखर, अखंड भारत।

प्रस्तावना

चाणक्य की आर्थिक नीतियों का वर्तमान युग में भी अपना विशेष महत्त्व है आज भी उनकी नीतियाँ उनके विचार उतने ही प्रासंगिक हैं जितने की पहले महत्त्वपूर्ण थे। चाणक्य एक कुशल राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ अत्यंत विद्वान, कुशलवक्ता तथा राज्य की शासन प्रणाली के ज्ञान से परिपूर्ण ब्राह्मण थे। उन्हीं के प्रयासों के परिणामस्वरूप सिकंदर के भारत पर विजय प्राप्त करने के सभी प्रयास विफल साबित हुए। उन्होंने मगध में अत्यंत क्रूर, तानाशाही व प्रजा का अहित करने वाले नंद वंश को नष्ट कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की जिसे चन्द्रगुप्त मौर्य

सम्राट के नाम से जाना जाता है चन्द्रगुप्त मौर्य शासनकाल में राज्य की प्रजा अत्यंत सुखी रही क्योंकि चन्द्रगुप्त मौर्य को चाणक्य जैसे विद्वान, कुशल राजनीतिज्ञ तथा एक कुशल पथ-प्रदर्शक का मार्गदर्शन प्राप्त था जिसके कारण उनके शासनकाल में राज्य में धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा बौद्धिक उन्नति के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य किए गए।

चाणक्य के अर्थशास्त्र या कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण राज्य के कुशल संचालन का मार्ग प्रशस्त किया है। देश में राजा का मुख्य कर्त्तव्य प्रजा की रक्षा करना, उसका पालन करना तथा राज्य की समृद्धि करना है जिसका वर्णन कौटिल्य के अर्थशास्त्र के अन्तर्गत किया गया है।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र

यद्यपि अर्थशास्त्र का जनक एड्म स्मिथ को कहा जाता है लेकिन वास्तव में सर्वप्रथम अर्थशास्त्र के रचियता फ्विष्णु शर्माय् चाणक्य या कौटिल्य हैं जिन्होंने 400 ई. के लगभग अर्थशास्त्र की रचना की थी। कौटिल्य का वास्तविक नाम (पितृ-प्रदत्त) विष्णु गुप्त था। चणक का पुत्र होने के कारण रहें चाणक्य कहा जाता है तथा कटिल राजनीतिज्ञ होने के कारण उन्हें कौटिल्य कहा जाता है। भारतीय इतिहास का उदीयमान नक्षत्र और मौर्य वंश के महाप्रतापी सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने विष्णुदत्त नामक एक अद्‌भुत कुटिल मति राजनीतिज्ञ ब्राह्मण की सहायता से मगध के नंद वंश को नष्ट कर तथा शक्तिशाली यवनराज सिकन्दर के सम्पूर्ण प्रयत्नों को विफल कर लगभग 321 ई. पूर्व में एक विराट साम्राज्य की स्थापना की जिसे मौर्य साम्राज्य के नाम से पुकारा गया। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से यह विदित होता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य एक असधारण दिग्विजयी सम्राट हुआ है और उसने अपने राज्यकाल में धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और बौद्धिक उन्नति के लिए अविरल प्रयत्न किये।

कौटिल्य के राजनीतिक सिद्धान्त

कौटिल्य की राजनीति के तीन सिद्धान्त हैं–

1. इस श्रेणी में ऐसे उद्योगों को रखा गया है जिन पर राज्य का स्वामित्व हो और जो राज्य के द्वारा ही संचालित एवं संगठित हों। इन उद्योगों की पूँजी, श्रम, उद्यम का दयित्व राज्य पर निर्भर रहे। इस प्रकार की औद्योगिक अर्थनीति का परोक्ष उद्देश्य एक सशक्त, आत्मनिर्भर और सर्वसाधन सम्पन्न राज्य की प्रतिष्ठा करना था। इसमें मुख्य

उद्योग सोना, चाँदी, शिलाजीत, तांबा, शीशा, टिन, लोहा, मणि, लवण आदि उद्योग है।

2. दूसरी श्रेणी में वे सभी उद्योग आते हैं, जिन पर नागरिकों का पूर्ण अधिकार या निजी संपत्ति आती है। उनके संगठन, संचालन, प्रबंध, पूँजी, श्रम आदि का दायित्व नागरिकों पर ही निर्भर है। उन पर जनता का ही पूर्ण स्वामित्व है। ऐसे उद्योगों में खेती, सूत, शिल्प गौ-पालन, अश्वपालन, हस्तशिल्प, सुरा, माँस, वेश्यालय और नट-नर्तक, गायक, वादक आदि आते हैं।

3. तीसरे सिद्धांत में उन्होंने समाज में ऐसी सुव्यवस्था बनाए रखने की नीति बताई है, जिसमें राज्य के समस्त उत्पादन, वितरण, उपयोग पर शासन सत्ता का नियंत्रण बना रहेगा। धर्म, अर्थ व काम इन तीनों का पारस्परिक संबंध बताते हुए कौटिल्य ने यह स्वीकार किया है कि उनमें प्रमुखता अर्थ की है और शेष दोनों धर्म और काम, अर्थ (धन) पर ही निर्भर है। यही अर्थ राज्य कर के रूप में या रक्षा के पुरस्कार हेतु या सेवा के प्रतिदान के निमित्त शासन को प्राप्त होकर एक संरक्षित स्थान पर एकत्र कर रखा जाता है। तब उसी को राजकोष के नाम से कहा गया है। कौटिल्य ने कोष विभाग के कर्मचारियों से लेकर कोष की सुरक्षा, उसकी वृद्धि के उपाय, उसकी आय के साधन और उसके कम होने के कारणों पर बड़ी सूक्ष्मता से विचार किया है। राज कर ऐसा होना चाहिए, जो प्रजा पर भार स्वरूप न हो। राजा को अपना आचरण उस मधुमक्खी के समान रखना चाहिए, जो वृक्षों, फूलों को बिना कष्ट पहुँचाये उनसे मधु एकत्र करती है। जो वस्तुएँ देश के लिए दुःखदायक हों, निरर्थक हों या केवल शौक के लिए हों, उन पर अधिक कर लगा करके उनका आयात कम होना चाहिए। इसके अतिरिक्त कुछ पदार्थ ऐसे भी थे, जिनका निर्यात वर्जित था और देश में उनका आयात करने के लिए भी किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता था। जैसे अस्त्र-शस्त्र आदि धातु, सेना के काम आने वाले रथ आदि अप्राप्य या दुर्लभ पदार्थ, अनाज और पशु आदि। कुछ अवस्थाओं में विशेष कर का प्रावधान था, जैसे लोग विदेशों से अच्छी सुरायें आदि लाते थे अथवा घर में अरिष्ट आदि बनाते थे, उन पर इतना अधिक कर लगाया जाता था, जिससे राज्य में बिकने वाली ऐसी चीजों की कम बिक्री का हरजाना निकल आये।

कौटिल्य के आर्थिक विचार

कौटिल्य के आर्थिक विचारों में मुख्य स्थान सार्वजनिक वित्त का है क्योंकि चाणक्य के अनुसार बिना वित्त/धन या अर्थ के अर्थव्यवस्था को संचालित करना संभव नहीं है उनके अनुसार किसी भी देश की समृद्धि उसकी वित्तीय स्थिति पर निर्भर करती है जिस देश के पास अर्थ अर्थात् धन है तथा उसकी प्रबंधन व्यवस्था भी कुशल है तो उस देश को आपातकाल स्थितियों जैसे बाढ़, भूचाल, सूखा आदि प्राकृतिक आपदाओं से देश की जनता को सुरक्षित रखने तथा उनका पर्याप्त भरण-पोषण करने में भी सहायता मिलती है। कौटिल्य के अनुसार देश की 'कर' प्रणाली न्यायोचित होनी चाहिए जिसमें जनता के कल्याण में वृद्धि हो सके तथा अनुदान या आर्थिक सहायता भी शासक के द्वारा महिलाओं, नाबालिकों, विद्यार्थियों, दिव्यांग तथा अन्य समाज के कमजोर वर्गों को प्रदान की जानी चाहिए। वस्तु की कीमत निर्धारण में जिस प्रकार मांग एवं पूर्ति की शक्तियों को अर्थशास्त्री मार्शल ने महत्त्वपूर्ण माना है कौटिल्य जिन्हें कि भारत में अर्थशास्त्र का जनक कहा जाता है उनके अनुसार भी राजा को स्वयं अपनी इच्छानुसार वस्तु की कीमत नहीं निर्धारित करनी चाहिए बल्कि मांग एवं पूर्ति के आधार पर ही कीमत का निर्धारण होना चाहिए। कौटिल्य ने वस्तु की कीमत की अवधारणा को "श्रनेज च्तपबम" से समझाया है। उनके अनुसार व्यापारियों को अपने व्यापार के संचालन के लिए 5% से 10% लाभ मार्जिन रखते हुए वस्तु की कीमत का निर्धारण करना चाहिए निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमियों को वस्तु की कीमत का निर्धारण करते समय उत्पादन लागत के आधार पर ही रखना चाहिए उससे अधिक कीमत या मनमानी कीमत जनता से नहीं वसूल करनी चाहिए। कौटिल्य अर्थशास्त्र में देश की कुशल शासन व्यवस्था तथा जनकल्याण को सर्वोपरि मानते हुए एक कुशल राजा के कर्त्तव्यों का उल्लेख किया गया है जो वर्तमान युग में भी प्रासंगिक है। कौटिल्य अर्थशास्त्र चाणक्य की आर्थिक नीतियों व राजनीतिक सिद्धांतों का सम्मिश्रण है जिसके माध्यम से अर्थव्यवस्था की कार्यप्रणाली के सुचारु रूप से संचालन करने का अद्भुत ज्ञान प्राप्त होता है।

कौटिल्य के अर्थशास्त्र और उनके जीवन संबंधी ध्येयों का अध्ययन कर हर बात स्पष्ट रूप से समझ में आ जाती है कि कौटिल्य का उद्देश्य एक ऐसे विराट साम्राज्य की स्थापना करना था, जिसकी शासन व्यवस्था निरकुंश हो, जिसके अतुल बल, वैभव के समक्ष किसी को भी सिर उठाने का साहस न हो; फिर भी उसकी नीति के अंतराल में लोक कल्याण की व्यापक भावना विद्यमान थी, जिसका उल्लंघन चंद्रगुप्त ने कभी भी नहीं किया। यही कारण रहा है कि कौटिल्य की निरंकुश नीति में प्रजातंत्रीय विचारों का आश्चर्यमय समन्वय था।

चाणक्य की कुटिल राजनीति व प्रखर बुद्धि कौशलता के आधार पर ही भारत को अखंड अर्थात् (भारत का बंटवारा ना होने देना) बनाने में सफलता प्राप्त हुई थी यूनान के सिकंदर

VEETHIKA-*An Interdisciplinary International Research Journal*©2015 QTanalytics
2454-342x electronic ISSN

जोकि विश्व के कई देशों पर विजय हासिल (प्राप्त) करने के पश्चात् भारत को जीतने का सपना लेकर भारत की सीमा में प्रवेश करने आये थे लेकिन चाणक्य की कुटिल राजनीति व प्रखर बुद्धि के बल पर सिकंदर के विश्व विजयी सपने को चकनाचूर कर अखंड भारत के सपने को साकार करने का श्रेय चाणक्य को ही जाता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त व्याख्या के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य शासन काल की सफलता चाणक्य की आर्थिक नीतियों, विचारों तथा कुशल मार्गदर्शन का परिणाम थी कोई भी राजा या शासक प्रजा के कल्याण के बिना सफल या कुशल शासक साबित नहीं हो सकता है जो राजा प्रजातन्त्र की स्थापना कर जनता को महत्त्व दे तथा उनका कल्याण करे वही कुशल राजा युगों-युगों तक अपनी अमिट छाप छोड़ता है वर्तमान में हमें कौटिल्य के अर्थशास्त्र का अनुसरण करना चाहिए ताकि भारत में चहुँमुखी विकास हो सके तथा भारत भी विकसित देशों की श्रेणी में स्थान प्राप्त कर सके।

वर्तमान में कौटिल्य का अर्थशास्त्र अत्यन्त प्रासंगिक है जिसके आधार पर भारत में पुनः प्रजातन्त्र के महत्त्व को जनता व शासन अधिकारी समझने का प्रयास करें और जन कल्याण हेतु कार्य करें, ताकि सभी लोगों का जीवन सुखमय बन सके और देश का भविष्य उज्ज्वल हों।

संदर्भ (References)

- कौटिल्य अर्थशास्त्र
- Theory of State in Kautilya's Arthashastra.
- Political thoughts of Kautilya's.